14 / 06 / 77 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

संगम पर स्मृति सो समर्थी स्वरूप बन
होनहार देवता स्वरूप का अनुभव

➢➢ संगम पर स्थापना और विनाश के रहस्य पर मनन करती मै स्वदर्शन चक्रधारी आत्मा

➳ _ ➳ अपने इस ब्राह्मण जीवन के लक्ष्य को इमर्ज करती हुई बैठ गयी हूँ बापदादा के चित्र के सम्मुख

→ गहराई से मनन करती हुई मैं आत्मा

→ विनाश किसका और स्थापना किसकी

- विनाश इस पुरानी दुनिया का
- पुराने संस्कारों का
- और स्थापना सतयुगी दुनिया की
- दैवीय संस्कारों की

→ मैं देख रही हूँ, मेरे लिए स्वर्गीय सुखों की इन्वेस्टमेंट में जुटी ये विश्व की अनेक आत्माएं

→ सब कुछ भूलकर कितनी जी जान से सेवा में जुटी है

→ न प्रभु परिचय है इनको, नही सतयुगी दुनिया की आस है

→ मेरे लिए स्वर्ग की स्थापना में, मगर भूली ये अपनी भूख प्यास है

➳ _ ➳ होनहार देवताई पद के नशे में चूर और बापदादा के प्यार का एहसास मन मे भरती मैं आत्मा, इस देह से डिटैच होती जा रही हूँ...

→ मैं आत्मा फरिश्ता बन पहुँच गयी हूँ सूक्ष्म वतन मे

→ सामने झूले पर झूला झूलते बापदादा

→ मैं आत्मा भी बैठ गयी हूँ बापदादा के ही बगल में

→ अतीन्द्रिय सुखों का ये झूला है

→ देवताई पद का नशा है बस

→ बाकी सब कुछ भूला भूला है

→ एक एक कर मेरी आँखों के सामने इमर्ज होते स्वर्ग के दृश्य

- नन्हा बालकृष्ण झूला झूलते हुए
- और मैं बालकृष्ण का बालसखा
- ये सतयुगी बगीचा
- और रंग बिरंगे मधुर कलरव करते पक्षीगण
- बालकृष्ण के संग की ये अनूभूति
- गहराई से मेरे मन में समाती जा रही है

→ सहसा बापदादा का हाथ मैं आत्मा अपने सिर पर महसूस कर रही हूँ

→ और देख रही हूँ स्वयं को बापदादा के साथ उसी अतीन्द्रिय सुखों के झुले पर

→ बापदादा दादा की आँखों में गहराई से झांकती हुई मै आत्मा

→ इन स्वर्णिम सुखों की प्राप्ति का आधार जहाँ एक ही संकल्प के रुप में झलक रहा है

- तेजी से मन बुद्धि में उभरता एक दृढ संकल्प
- निरन्तर एक बाप की याद
- ये याद ही योग्यता की निशानी है
- मेरी इस सतयुगी राजधानी और
- इन विदेशी सैरगाहों की

➳ _ ➳ स्थापना विनाश का ये रहस्य बुद्धि में स्पष्ट कर मै आत्मा चल पडी परमधाम की ओर...

➳ _ ➳ योग्यता का आधार बस एक की याद को स्थिर करना

→ सुनहरे लाल रंग के प्रकाश में मै आत्मा,

→ बीजरूप शिव पिता को निहारते हुए

→ निरंतर एक की याद में स्वयं को एकरस करती हुई मैं आत्मा

→ ज्ञान, सुख, शांति, शक्ति और गुणों की किरणों से स्वयं को भरपूर कर रही हूँ

→ अब ये किरणें जा रही है कल्पवृक्ष की उन सभी आत्माओ की ओर

- जो जिज्ञासु है
- देश-विदेश में बसी है
- प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से सहयोगी है
- मेरे लिए स्वर्गीय साधन जुटा रही है

→ स्मृति सो समर्थ स्वरुप मै आत्मा लौट आई हूं अपनी देह में

→ हर आत्मा के प्रति शुभ भावना और शुभ कामना रखती

→ अपने देवताई स्वरुप को इमर्ज रख दातापन का भाव अनुभव कर रही हूं